IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्थानीय, ग्राम देवता–लोकविश्वास : एक सामाजिक–सांस्कृतिक विश्लेषण (पौड़ी गढ़वाल के सन्दर्भ में)

सुमन कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाजशास्त्र
पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल

सारांश–प्रस्तुत अनुसंधान आलेख, स्थानीय, ग्राम देवता – लोक विश्वास :– एक सांस्कृतिक–समाजशास्त्रीय विश्लेषण शीर्षक पर आधारित है। संस्कृति शब्द संस्कृत भाषा के सम् (परिष्कृत/शुद्ध) और कृति (करना या रचना) अर्थात सुधरी हुई एवं व्यवस्थानुकुल सांस्कारिक व्यवहारिक स्थिति) मानव संस्कृति को आविष्कारों विचारों, साधनों, माध्यमों के रूप में जाना जा सकता है। संस्कृति के मुख्य रूप से, दो प्रकार की श्रेणी होती है। भौतिक संस्कृति और अभौतिक संस्कृति, निष्कर्षतया संस्कृति एक ऐसा अविष्कार है। जो मानव समाज को संचालित तथा आस्तित्व में रखती है तथा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित हाती है। संस्कृति का अध्ययन ऐतिहासिक, साहित्यक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अधिक किया जाता है। किसी राष्ट्र समाज की पहिचान उसके लोकविश्वास तथा संस्कृति होती है। लोकविश्वासों का सामान्य अर्थ, उन सभी आस्थाओं मान्यताओं, धारणाओं तथा परम्पराओं से संबंधित होता है। जो परम्परागत रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्वतः ही चले जाते हैं। यह खासकर किसी धर्म ग्रन्थ या लिखित शास्त्रों पर आधारित नहीं होते हैं।

लोकविश्वासों को प्रमुख रूप से इस प्रकार से समझा जा सकता है।

1– टोना–टोटका भूत प्रेत पर अंधविश्वास के रूप में
2– स्वास्थ्य हेतु पारम्परिक चिकित्सा में घरेलू नुस्खों के रूप में
3– कृषि तथा प्राकृतिक संरक्षण, पशुधन हेतु देव सहायता की मान्यताऐं
4– परिवार के सदस्यों, समस्त ग्रामवासियों की देश प्रदेश में खुशहाली तथा सुरक्षा की मान्यता

उत्तराखण्ड में गढ़वाल तथा कुमाऊं की संस्कृति में लोक विश्वास एवं कई पौराणिक धारणाऐं एवं लोकविश्वासों से संबंधित कर्मकाण्ड प्राचीन समय से चले आ रहे हैं। यहां तक जरूर है कि कुछ मान्यताऐं एवं विश्वास जो अत्यधिक अन्धविश्वासों पर आधारित थे वह लगभग समाप्त हो रहे हैं। प्रस्तुत अध्ययन में वर्तमान समय में गढ़वाल तथा कुमाऊं में, स्थानीय देवता/ग्राम देवता और लोकविश्वास : एक सामाजिक सांस्कृतिक विश्लेषण पर केन्द्रित है। उत्तराखण्ड के पर्वतीय समाज में लोक विश्वासों के अन्तर्गत अपने कुलदेवताओं, कुलदेवियों, ईष्टदेवों की पूजा, उपासना, अर्चना मंगलकामना तथा कल्याण एवं आध्यात्मिक प्रक्रिया के अन्तर्गत की जाती है, जिसका मूल उद्देश्य सर्वे भवन्तु सुखमया, सर्वभवन्तु निरामया पर आधारित है।

कीवडः –स्थानीय/ग्रामदेवता/ईष्टदेवता/भूमि देवता, लोकविश्वास, लोकधारणाऐं कर्मकाण्ड, सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, भौतिक और अभौतिक संस्कृति पारम्परिक चिकितसा, टोना–टोटका, भूत प्रेम, संरक्षण, मंगलकामना।

परिचय

प्रस्तुत अनुसंधान आलेख 'स्थानीय ग्राम देवता एवं लोकविश्वास : एक सामाजिक सांस्कृतिक विश्लेषण' (उत्तराखण्ड के गढ़वाल–कुमाऊँ के सन्दर्भ में)' शीर्षक पर है। अनुसंधान कार्य में कुल 125 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। गढ़वाल के क्षेत्र राठ से 35, चौदकोट क्षेत्र से 25, सांवली खाटली क्षेत्र से 20, सल्ट क्षेत्र से 20, स्याल्दे क्षेत्र से 25 उत्तरदाताओं का निदर्शन विधि के द्वारा प्राप्त किया गया है। अन्तिम रूप से चयनित 125 उत्तरदाताओं का साक्षात्कार अनुसंधान कार्य के प्रमुख माध्यम है। परिणामों को प्रतिशतता के आधार पर प्राप्त करके शोध समस्या का विश्लेषण किया गया है। विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति, क्षेत्रीय सर्वेक्षण को अपनाया गया है।

गढ़वाल की लोकसांस्कृतिक विश्वासों में स्थानीय और ग्राम देवता– भारतोय वैदिक समाज में हमारे पौराणिक एवं महत्वपूर्ण सृष्टि निर्माता, पालनहार, संरक्षक महापुरूषों को देवरूप में स्वीकार करने की प्रथा प्राचीन एतिहासिक काल से ही विद्यमान रही है। उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल तथा टेहरी गढ़वाल और चमोली गढ़वाल, जौनसार आदि क्षेत्रों में लोक संस्कृति के अन्तर्गत स्थानीय देवता तथा ग्राम देवताओं की भूमिका व्यक्ति, परिवार, ग्राम समुदाय के पालन संरक्षण तथा माता–पिता समान भूमिकाओं में देखा जाता है। ऐसी मान्यता है कि यह किसी परिवार समुदाय तथा समाज की सुख–दुख की स्थिति में अदृश्य सहायताकार के रूप में कार्य करती है तथा कार्य करते हैं। प्रमुख गढ़वाली स्थानीय तथा ग्राम देवताओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है –

ग्राम देवता/स्थानीय देवता का नाम	आस्था का आधार
नागराजा	विष्णु के अवतार के रूप में पूजा संरक्षक देवका
निरंकार	शिव के रूप में, पालक संरक्षक देवता
गोरिल	जागृत एवं चमत्कारी देवता न्याय देवता के रूप में प्रसिद्ध
कच्चा	गढ़वाल में नयय (परचाधारी देवता में रूप में प्रसिद्ध
डौंडिया	जगृत देवताओं, दोषी अत्याचारियों को दण्ड देने के लिए प्रसिद्ध
भूमिया	भूमि और फसलों की रक्षक के रूप में जाने जाते हं
चोमूं	चौपायों के रक्षक (पशुधन रक्षक) माने जाते हैं।
भैरव	शिव के स्वरूप के रूप में पूजा
क्षेत्रपाल	शत्रु से रक्षा पाने के लिए प्रसिद्ध
नर सिंह	यह देवता मुख्य रूप से धियाणियों (विवाहित पुत्री बहन) की सहायता वाले माने जाते हैं।
हीत	शिव से उत्पत्ति मानी जाती है।
गरीबनाथ	नाथपंथी गरीबनाथ मन्दिर दुग्ड्डा पौड़ी में स्थित है।
केलापार	कुमाऊ के चम्पावत क्षेत्र में पूजा की जाती है।
कंडार देवता	शिव के स्वरूप के रूप में उत्तरकाशी क्षेत्र में विशेष रूप से पूजे जाते है।
बगास	शिव के रूप में टिहरी गढ़वाल में विशेषकर पूजे जाते है
कालू का कच्चा	कालू बगड कर्णप्रयाग क्षेत्र में, भविष्य बताने तथा पारिवारिक घटनाओं को बताने वाले देवता के रूप में प्रसिद्ध

अनुसंधान क्षेत्र में, लोकविश्वासों के अन्तर्गत स्थानीय, ग्राम, देवताओं के प्रति आस्था, पूजा अर्चना तथा कर्मकाण्डों का अध्ययन

सारणी संख्या – 01

	हाँ		नहीं		उदासीन		कुल उत्तरदाता
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	
भूमि देवताओं की पूजा अधिक प्राथमिकता से करते हैं	14	11.2	00	00	03	2.4%	125
ईष्ट देवी, देवताओं की पूजा अधिक प्रथमिकता से करते हैं	51	40.8	00	00	06	4.8%	
कुल की देवी देवताओं की पूजा अधिक प्राथमिकता से करते हैं।	50	40	00	00	01	0.80	

उपरोक्त सारणी संख्या 01 में प्राप्त परिणामों में उत्तरदाताओं से पूछे गये प्रश्नों के सापेक्ष यह प्राप्त हुआ कि 11.2 प्रतिशत उत्तरदाता भूमि देवताओं की पूजा अधिक प्राथमिकता के साथ करते हैं। जबकि 2.4 प्रतिशत उत्तरदाता उदासीन रहे। इसी क्रम में 4.8 प्रतिशत उत्तरदाता ने बताया कि उनके द्वारा प्राथमिक रूप से अपने ईष्ट देवी–देवताओं की पूजा की जाती है। जबकि 4.8 प्रतिशत उत्तरदाता उदासीन पाये गये। जबकि 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वह प्राथमिक रूप से अपने कुल देवी, देवताओं की पूजा करते हैं। मात्र 0.8 प्रतिशत उत्तरदाता उदासीन पाये गये। निष्कर्षतया यह कहा जा सकता है कि अनुसंधान क्षेत्र के समस्त उत्तरदाता किसी न किसी रूप से अपने स्थानीय ग्रामीण देवी–देवीताओं की पूजा करते हैं या कर रहे हैं।

लोकविश्वासों के अनुसार अनुसंधान क्षेत्र में अधिक मान्यता प्राप्त देवी–देवताओं के प्रति आस्था का अध्ययन

सारणी संख्या 02
स्थानीय ग्राम देवताओं में उत्तरदाताओं की आस्था का तुलनात्मक विवरण

	हाँ		उदासीन		कुल उत्तरदाता
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	
अधिक आस्था है, निरंकार देवता, गोरिल देवता, कच्चा, डौडिया, नरसिंह	97	77.6	03	2.4%	125
भैरव, काल भैरव, कालिंका देवी, माँ भगवती, चोमूं, मसाण, कच्चा मसाण	23	18.4	02	1.6%	

सारणी संख्या 02 में प्राप्त परिणामों की स्थिति के अनुसार स्थानीय ग्राम देवताओं में आस्था को लेकर 97 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वह स्थानीय ग्राम देवता, निरंकार देवता, गोरिल देवता, कच्चा डौडियां और नरसिंह देवता के प्रति अधिक आस्था को रखते हैं। 2.4 प्रतिशत उत्तरदाता इस सन्दर्भ में उदासीन पाये गये। जबकि मात्र 18.4 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह व्यक्ति किया कि उनकी अधिक आस्था भैरव, कालिंका देवी, माँ भगवती, चोमूं, मसाण तथा कच्चा मसाण देवी में अधिक आस्था है या रखते हैं। निष्कर्षतया यह कहा

जायेगा कि अनुसंधान क्षेत्र में किसी न किसी रूप से स्थानीय ग्राम देवताओं के प्रति आस्था विद्यमान है तथा आस्था की भावना प्रबल है।

अनुसंधान क्षेत्र में लोकविश्वासों के प्रति मूल भावों का अध्ययन

सारणी संख्या 03
लोकविश्वासों के प्रति मूल भावना का अध्ययन

	हाँ		उदासीन		कुल उत्तरदाता
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	
परम्परागत रूप से पूर्वजों द्वारा पूजे तो हैं, इसी परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं	29	23.2%	04	32%	125
पूर्वजों की परम्परा के साथ–साथ परिवार के सदस्यों के लिए प्रगति, आध्यात्मिक भावना की जागृति, संरक्षण, आर्थिक उन्नति, शैक्षिक उन्नति, स्वास्थ्यगत लाभ का विश्वास है	88	70.4%	04	3.2%	

उपरोक्त सारणी संख्या 03 में लोक विश्वास के प्रति मूल भावना के प्रति प्रश्न करने पर प्रश्नगत विषय में 23.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि परम्परागत रूप से उनके पूर्वजों के द्वारा पूजे जाते हैं और वह इसी परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। जबकि 3.2 प्रतिशत उत्तरदाता इस प्रश्न के सापेक्ष उदासीन रहे। वहीं दूसरी ओर पूर्वजों की परम्परा के साथ–साथ परिवार के सदस्यों के लिए प्रगति, आध्यात्मिक, जागृति, संरक्षण, शैक्षिक उन्नति और स्वास्थ्यगत लाभों आदि के विश्वासों के सापेक्ष 88 प्रतिशत उत्तरदाता सहमत रहे। जबकि मात्र 3.2 प्रतिशत उत्तरदाता उदासीन पाये गये। निष्कषतया यह प्रकट होता है कि सभी उत्तरदाता अपने तथा अपने समुदाय के कल्याण की भावना के सन्दर्भ में लोक विश्वासों पर अपनी आस्था को रखते हैं।

लोकविश्वासों के प्रति युवा वर्ग की धारणाओं का अध्ययन

सारणी संख्या 04

	आवृति	प्रतिशत	कुल उत्तरदाता
आपके क्षेत्र के युवा वर्ग लोकविश्वास में आस्था रखते हैं। परन्तु कुछ लोक विश्वासों को नहीं मानते हैं।	76	60.80%	125
लोक विश्वासों में आस्था रखते हैं और सभी लोक विश्वास सही हैं। यह मानते हैं।	27	21.60%	
लोक विश्वासों के प्रति उदासीन रहते हैं।	22	17.60%	

सारणी संख्या 04 में प्राप्त परिणामों के अनुसार 60.80 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके क्षेत्र के युवा वर्ग के लोग लोक विश्वासों में आस्था रखते हैं। परन्तु कुछ लोक विश्वासों को नहीं मानते हैं। 21.60 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार उनके क्षेत्र के युवा लोकविश्वासों में आस्था रखते हैं और सभी लोक विश्वास सही हैं, यह मानते हैं। जबकि क्षेत्र के 17.60 प्रतिशत उत्तरदाता प्रश्नगत विषय पर उदासीन रहे।

अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि वर्तमान समय में भी अनुसंधान क्षेत्र में लोकविश्वास तथा लोकविश्वासों पर आधारित धारणाऐं प्रचलित हैं।

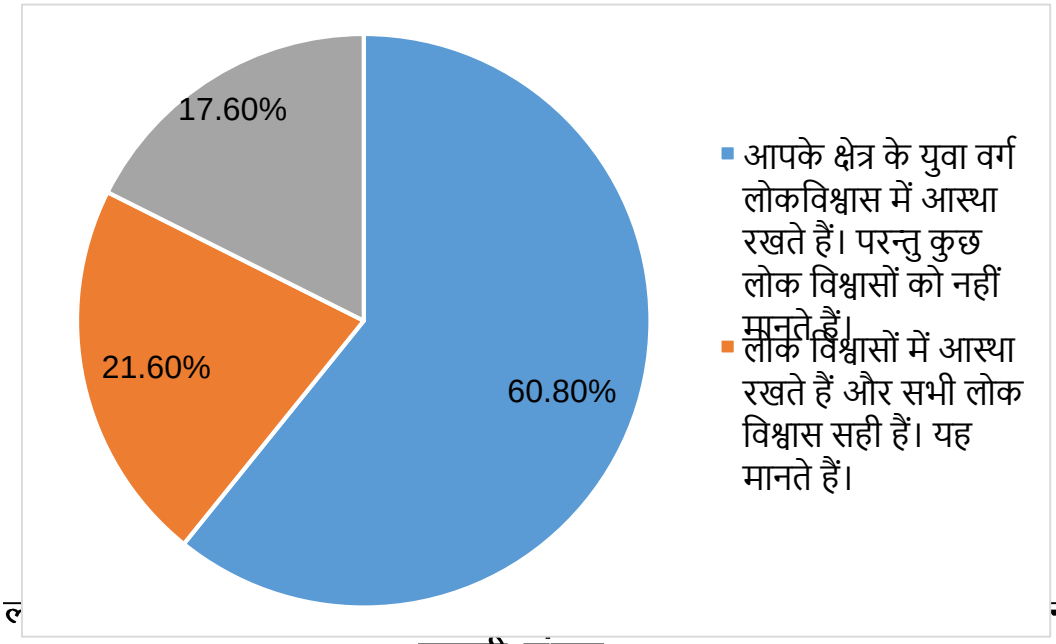

सारणी संख्या 05

	हाँ		नहीं		कुल उत्तरदाता
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	
क्षेत्र/अध्ययन क्षेत्र के परम्परागत लोकविश्वासों में आस्था, धारणा, विश्वासों में परिवर्तन आया है।	125	100%	00	00	125

सारणी संख्या 05 में प्राप्त परिणामों में यह पाया गया कि सत–प्रतिशत उत्तरदाता के अनुसार उनके क्षेत्र के परम्परागत, लोकविश्वासों, आस्था, धारणाओं, विश्वास में परिवर्तन आया है।

निष्कर्ष–प्रस्तुत अध्ययन स्थानीय ग्राम देवता–लोक विश्वास : एक सामाजिक सांस्कृति विश्लेषण (कुमाऊँ–गढ़वाल के सन्दर्भ में) पर आधारित है। लोकविश्वास के प्रकार लोकविश्वास में स्थानीय ग्राम देवता, लोकविश्वासों के प्रति आस्थाऐं, लोकविश्वास और कर्मकाण्ड आदि बिन्दुओं को लेकर अध्ययन करने पर सारणी संख्या 1 से सारणी संख्या 05 में प्राप्त परिणामों के विश्लेषण से यह पाया गया कि परम्परागत तथा प्राचीन रूप से अध्ययन क्षेत्र में प्रचलित लोक विश्वास जो कई वर्षों कीपुरानी पीढ़ियों से चले आ रहे हैं। वर्तमान में भी अपने अस्तित्व में है तथा इन लोकविश्वासों के प्रति क्षेत्र की जनआस्थाएं बनी हुयी हैं। यह तथ्य जरूर अनुसंधान में आया है कि युवा वर्ग में लोक विश्वासों के प्रति भाव या आस्था का स्तर पुराने लोगों को तरह का नहीं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

- सांकृत्यायन राहुल – हिमालय परिचय
- रतूड़ी हरिकृष्ण – गढ़वाल का इतिहास
- थस्माणा हरिराम – सभ्य मानव का मूल स्थान
- डबराल शिव प्रसाद – उत्तराखण्ड के पशुचारक
- नौटियाल शिवानन्द – वसुधरा
- नौटियाल गोविन्द प्रसाद – तपोभूमि, बद्रिकाश्रम
- आहूजा राम – सामाजिक अनुसधान, ISBN-81-7033-900-6रावत पब्लिकेशन जयपुर
- कुकशाल अरूण तिवारी चन्द्रशेखर – उत्तराखण्ड का पर्वतीय समाज और बदलता आर्थिक परिदृश्य –ISBN-9789390743063समय साक्ष्य प्रकाशन देहरादून

- जोशी घनश्याम – उत्तराखण्ड का रानीतिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास –ISBN-978-81-7977-615-5 पब्लिशर्स बुक डिपो, बेरली
- नौटियाल, विकास (2011) : आधुनिक एवं समकालीन उत्तराखण्ड हिमालय–ISBN-978-81-86-844-99-1–बिसर पब्लिशिंग हाउस, देहरादून, पृ0सं0 247–249
- डॉ0 तिवारी, श्यामधर गणेश खुगशाल (2011) : गढ़वाल और गढ़वाल सम्पादक चन्द्रपाल सिंह रावत –ISBN-81-8644-04-X विनसर पब्लिशिंग कम्पनी देहरादून, पृ0सं0 236
- शर्मा मनीषा डी.डी. (2015) : उत्तराखण्ड का सामाजिक एवं साम्प्रदायिक इतिहास, ISBN : 978-81-7988-104-0 अंकित प्रकाश हल्द्वानी पृ0सं0 25–26